शीर्षक

छायावाद के प्रवर्तक और प्रतिनिधि रचनाकार के रूप में जयशंकर प्रसाद के प्रदेय की मीमांसा कीजिए ।

एम॰ए॰ हिन्दी (प्रथमवर्ष) द्वितीय समेस्टर
के विद्यार्थीगण हेतु ।

व्याख्याता : डॉ॰ राजीव कुमार वर्मा
सहायक आचार्य (हिन्दी विभाग)
नेहरू ग्राम भारती (डी॰यू॰) प्रयागराज

प्रश्न 1· छायावाद के प्रवर्तक और प्रतिनिधि रचनाकार के रूप में जयशंकर प्रसाद के प्रदेय की मीमांसा कीजिए।

उत्तर. जयशंकर प्रसाद जी हिन्दी काव्य-जगत के युग-प्रवर्तक कवि हैं। इलाचन्द जोशी व अन्य के मतानुसार प्रसाद जी छायावाद के प्रवर्तक हैं। उन्होंने हिन्दी काव्य को अपनी दिव्य-प्रतिभा से एक नया आलोक प्रदान किया। परम्पराओं और रूढ़ियों से जकड़ी कविता-कामिनी को प्रसाद जी ने मुक्त कराया और उसे नया जीवन दिया। उनकी नवीन कल्पना ने काव्य का ऐसा मनोहारी श्रृंगार किया कि उसे देखकर सृष्टि का सौन्दर्य भी लज्जित हो गया। प्रसाद ने आधुनिक काल में नयी काव्य-धारा का प्रवर्तन किया, जिसे छायावाद के नाम से जाना जाता है। द्विवेदीयुगीन इतिवृत्तात्मकता की प्रतिक्रिया में छायावादी काव्य का आगमन हुआ। इसमें प्राचीन रूढ़िवादिता के प्रति विद्रोह की भावना थी, यह अपनी लाक्षणिकता, प्रतीकात्मकता, चित्रोपमता, रमणीय-कल्पना, सूक्ष्म सौन्दर्यसत्ता और रहस्यात्मकता के साथ एक नवयुग का निर्माण कर रहा था।

सौन्दर्य-भावना - छायावादी काव्य में सौन्दर्य का व्यापक एवं सूक्ष्म चित्रण हुआ है। सौन्दर्यांकन प्रसाद के काव्य की मुख्य विशेषता है।

इस युग का कवि कण - कण में सौन्दर्य का दर्शन करता है। वह सौन्दर्य की आभा से इतना अभिभूत है कि उसकी आँखों में सौन्दर्य की चंचल कृतियाँ रहस्य बनकर नाचती हैं। प्रसाद सौन्दर्य के उपासक हैं, उन्होंने अपने काव्य में सौन्दर्य का विराट् चित्रण किया है। उनकी दृष्टि केवल बाह्य आकार तक ही नहीं सीमित है, उसमें सौन्दर्य के सत्य से सम्पर्क करने की अद्भुत क्षमता है -

"आह ! वह मुख पश्चिम के व्योम,
बीच जब घिरते हो घनश्याम,
तरुण रवि मण्डल उनको भेद,
दिखाई देता हो छवि धाम।"

प्रेम - भावना - छायावादी काव्य मूलत : प्रेम काव्य है। प्रसाद ने अपने काव्य में प्रेम का ऐसा दीप जलाया है कि जिसकी किरणों ने सम्पूर्ण मानवता को आकर्षित कर लिया। कामायनी में प्रेम के उदात्त रूप के दर्शन होते हैं। 'श्रद्धा सर्ग' में प्रेम भावना की इतनी सूक्ष्म अभिव्यक्ति कवि ने की है कि जब मनु श्रद्धा को देखते हैं तो आकर्षण के साथ उनके मन में हलचल पैदा हो जाती है, "कौन हो तुम वसन्त के दूत,
विरस पतझड़ में अति सुकुमार
घन तिमिर में चपला की रेख,
तपन में शीतल, मन्द बयार।"

मानवतावादी दृष्टिकोण - छायावादी काव्य मे मानवतावादी स्वर खुलकर मुखरित हुआ है। इस काव्य में मानव का महत्त्व सबसे ऊपर है। प्रसाद मानवता के प्रति असीम श्रद्धा रखने वाले हैं। उन्हे विश्व-मानवता के कल्याण की चिन्ता है। मानव के आत्मिक, आध्यात्मिक और शारीरिक शक्ति पर उनको अत्यधिक विश्वास है तथा देव जाति की अपेक्षा वे मानव जाति को श्रेष्ठतर समझते हैं। कवि की दृष्टि मे मानव मे दुर्बलताएँ तो होंगी लेकिन उसकी आत्मिक शक्ति इतनी प्रबल है कि वह विपत्तियों, संकटों और झंझटों से टूटती नही है। वह पराजित होने पर भी पराजय को स्वीकार नही करता है तथा पुनः, नई चेतना जुटाकर संघर्ष करता है, वह हमेशा जूझता रहता है -

> "उन्हें चिनगारी सदृश सदर्प,
> कुचलती रहे खड़ी सानन्द।
> आज से मानवता की कीर्ति,
> अनिल, भू, जल में रहे न बन्द।"

प्रकृति-प्रेम - छायावादी कवि प्रकृति के प्रेमी हैं। उन्हें प्रकृति से अधिक लगाव है, इसीलिए उनकी भावाभिव्यक्ति प्रकृति के माध्यम से हुई है। वे प्रकृति को कभी नारी के रूप मे देखते हैं तो कभी किसी प्रेयसी के सौन्दर्यभाव का साक्षात्कार करते हैं। प्रसाद ने प्रकृति को सचेतन भाव मे देखा है। उनके काव्य में प्रकृति का मानवीकरण हुआ है।

वे प्रकृति के प्रति अधिक संवेदनशील रहे हैं। 'श्रद्धा सर्ग' प्रसाद के प्रकृति-प्रेम का परिचय देता है। यहाँ प्रकृति का अनेक रूपों में चित्रण हुआ है -

"उषा की पहली लेखा कान्त,
माधुरी में भीगी भर मोद।
मद भरी जैसे उठे सलज्ज,
भोर की तारक द्युति की गोद।"

स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह - छायावादी कवियों ने अपनी संवेदना और अनुभूति के तत्वों पर बल दिया है, इसलिए उनके काव्य में अनुभूतिपरक गहराई है। श्रद्धा सर्ग में कवि ने अनुभूतियों की गहराई में डूबने का प्रयास किया है। अनुभूति की यह गहराई चिन्ताकातर मनु की स्थिति, श्रद्धा से उसका साक्षात्कार, श्रद्धा के रूप चित्रण एवं सौन्दर्य-विधान तथा उदास एवं निराश मनु के प्रति उसके कथनों में दृष्टव्य होता है। कवि की सौन्दर्यानुभूति के लिए निम्नलिखित पंक्तियाँ उदाहरणार्थ प्रस्तुत हैं -

"नील परिधान बीच सुकुमार,
खिल रहा मृदुल अधखुला अंग।
खिला हो ज्यों बिजली का फूल,
मेघ वन बीच गुलाबी रंग।"

कल्पना का प्राचुर्य - प्रसाद की कल्पना नवोन्मेष शालिनी है जिसमें सौन्दर्य के शत्-शत् चित्र साकार हो उठते हैं। कल्पना का आश्रय लेकर

कवि सौन्दर्य का अपार्थिव एवं अतीन्द्रिय चित्र प्रस्तुत करने में समर्थ हुआ है। 'श्रद्धा सर्ग' में कल्पना के ललित और दूरारूढ़ दोनों ही रूप बड़ी सरलता से मिल जाते हैं -

"कुसुम कानन अंचल में मन्द,
पवन प्रेरित सौरभ साकार।
रचित परमाणु पराग शरीर,
खड़ा हो ले मधु का आधार।"

प्रतीकात्मकता - प्रतीक विधि के अन्तर्गत कोई वस्तु अपने विशिष्ट गुण-धर्म के कारण किसी अन्य वस्तु की बोधक बन जाती है, जिसमें वे गुण-धर्म प्रधान होते हैं। 'श्रद्धा सर्ग' में पराग, मधुराका, उल्का, शैलनिर्झर, हिमखण्ड, जलनिधि, तिमिर, गर्भ, संगीत, अनेक प्रतीक भरे पड़े हैं, यथा -

"एक विस्मृति का स्तूप अचेत,
ज्योति का धुंधला सा प्रतिबिम्ब।
और जड़ता की जीवन राशि,
सफलता का संकलित बिलम्ब।"

बिम्बात्मकता एवं चित्रमयता - उदात्त काव्यात्मकता, बिम्बात्मकता एवं चित्रमयता प्रसाद की कामायनी की सर्वश्रेष्ठ विशेषता है। 'श्रद्धा सर्ग' इस दृष्टि से कामायनी का प्रतिनिधित्व करता है। हिमालय की उठान को धरा की भयभीत सिकुड़न के रूप में देखना बिम्ब के माध्यम से देखना सम्भव हुआ है। कामायनी महाकाव्य के सफलतम बिम्ब 'श्रद्धा सर्ग' में ही हैं। श्रद्धा की

मुस्कान का बिम्बपरक चित्रण है -

" और उस मुख पर वह मुस्कान,
रक्त किसलय पर ले विश्राम ।
अरुण की एक किरण अम्लान,
अधिक अलसाई हो अभिराम ।"

अप्रस्तुत-विधान - प्रसाद ने चिन्ता, आशा, लज्जा, श्रद्धा आदि अमूर्त भावों को रूप प्रदान करने में सफलता पायी है। अमूर्त अप्रस्तुत विधानों में उनकी विशेष रुचि रही है। यथा -

" कुसुम कानन अंचल में मन्द,
पवन प्रेरित सौरभ साकार ।
रचित परमाणु पराग शरीर,
खड़ा हो ले मधु का आधार ।"

मानवीकरण एवं सादृश्य-विधान - मानवेतर वस्तु, विषय को मानव का रूप देना ही मानवीकरण है। 'श्रद्धा सर्ग' में इसके अनेक उदाहरण हैं। श्रद्धा स्वयं हृदय-वृत्ति का प्रतीक है एवं उसका मानवीकरण किया गया है। यथा -

" ऊषा की पहली लेखा कान्त,
माधुरी से भीगी भर मोद ।
मद भरी जैसे उठे सलज्ज,
भोर की तारक द्युति की गोद ।"

नवीन अलंकारों का प्रयोग - छायावाद में अनेक नये-नये अलंकारों का प्रयोग किया गया है। प्रसाद ने मानवीकरण, विशेषण-विपर्यय, ध्वन्यार्थ, व्यंजना आदि नवीन अलंकारों का प्रयोग किया है। विशेषण-विपर्यय अलंकार के प्रयोग में उन्हें एक प्रकार की सिद्धहस्तता प्राप्त थी और इसका प्रमाण 'श्रद्धा सर्ग' में अनेक स्थलों पर मिलता है -

"और उस मुख पर वह मुस्कान
रक्त किसलय पर ले विश्राम।
अरुण की एक किरण अम्लान,
अधिक अलसायी हो अभिराम।"

इस प्रकार अनुभूति की जटिलता और सूक्ष्मता की अभिव्यक्ति के लिए छायावादी कवियों ने नयी कला-विधियाँ विकसित की हैं। प्रसाद जी की 'कामायनी' इन सभी विशेषताओं का उदाहरण है। उनकी सम्पूर्ण 'कामायनी' नवीन कलात्मक अभिव्यक्तियों का प्रतिनिधित्व करती है।